2 – पार्थिवलिंगपूजन[1]

प्रातःकाल अर्थात् ब्राह्ममुहूर्त में उठकर नित्यक्रिया से निवृत्त होकर स्नान करना चाहिये तथा पवित्र वस्त्रों को धारण करना चाहिये। प्रातः सन्ध्योपासनादि के पश्चात् रक्षा दीप जला उत्तराभिमुख होकर नीचे लिखे श्लोक के द्वारा पृथ्वी की पाद वन्दना करके (शिवलिंग निर्माण हेतु) अतीव शुद्ध मृत्तिका को लेना चाहिये। मृत्तिका लेने से पहले गणपति का स्मरण कर निम्न मन्त्र को बोलें–

ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।
मृत्तिके त्वां प्रगृह्णामि प्रजया च धनेन च।।

तदनन्तर मृदाहरण मन्त्र–"ॐ **ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः**" से मिट्टी ग्रहण करें।

अर्थात्–हे पृथ्वी! वराह, कृष्ण, शतबाहु आदि अवतरणों के द्वारा तुम उद्धारित की गयी हो इसलिये धन, पुत्रादि की कामना से मैं तुम्हारे रज को ग्रहण करता हूँ। यह कहकर मन में मृदाहरण मन्त्र को बोलें और मिट्टी लेकर पवित्र स्थान में रखें तथा नीचे लिखे मन्त्र के द्वारा कुछ मिट्टी चारों ओर छिड़क दें और उत्तराभिमुख आसन बिछावें तथा विनियोग[2] सहित निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें।

"ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।।"

हे पृथ्वी! तुम समस्त जीवों को धारण करनेवाली हो और महाविष्णु ने तुम्हें कूर्म, वाराहादि रूपों से धारण किया है। इसलिये हे देवि! मेरे आसन की संशुद्धि करो। इसके पश्चात् हाथ में जौ और काले तिल लेकर नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुए अपनी रक्षा के लिये अपने चारों ओर फेंक दें।

"ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।"

भगवान् शंकर की आज्ञा से पृथ्वी पर रहनेवाले सब अनिष्टकारी जीव यहाँ से हट जायँ। इसके पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से स्वस्थ चित्त होकर मृत्तिका को विचूर्ण करें।

"ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमः। भवे भवे
नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।
ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः।"

मैं यह जानता हूँ कि आप क्षण भर में ही प्रकट हो सकते हैं। इसलिये हे सद्योजात! हरदम

---

1. पार्थिवलिंगपूजन की यह विधि पहली विधि से थोड़ी विस्तृत है तथा जटिल है। पहली विधि में पूजा के सभी उपचार '**ॐ नमः शिवाय**' इसी एक नाममन्त्र द्वारा अर्पित किये गये हैं जबकि यहाँ अलग–अलग नाममंत्रों का प्रयोग हुआ है। पार्थिवलिंग की पूजा की दोनों विधियाँ संक्षिप्त रूप से ही दी गयी हैं। पूजक अपनी सुविधा एवं योग्यता के आधार पर किसी भी विधि का प्रयोग कर सकते हैं।
2. विनियोग के लिये 'सरलीकृत पार्थिव–पूजन' लेख के पृष्ठ 1 की पादटिप्पणी सं. 4 देखें।

पैदा होनेवाले! आपको नमस्कार है। हे भवोद्भव! आपको बारम्बार नमस्कार है।

नीचे लिखे मन्त्र से मृत्तिका को भिगोवें।

ॐ **वामदेवाय नमः, ज्येष्ठाय नमः, श्रेष्ठाय नमः, रुद्राय नमः, कालाय नमः, कलविकरणाय नमः, बलविकरणाय नमः, बलाय नमः, बलप्रमथनाय नमः, सर्वभूतदमनाय नमो, मनोन्मनाय नमः।**

अखिल विश्व में सबसे बड़े तथा श्रेष्ठ होने के कारण हे वामदेव! ब्रह्माण्ड में भयंकर(रुद्र) रूप आप ही का है। आप ही काल के भी काल, महाकाल तथा सभी प्रकार की कला तथा बल का विकरण करनेवाले हैं, इसलिये आपको ही हे प्रलयंकर! सदा नमस्कार है। जगत् का सम्पूर्ण बल आप ही में अवस्थित है अथवा संसार की समस्त शक्तियों का प्रमथन आप ही के द्वारा हुआ करता है। समस्त प्राणियों के दमन तथा मानसिक विकास की शक्ति आप ही के द्वारा प्राप्त हुआ करती है अर्थात् प्राणीमात्र के उत्थान - अध:पतन का होना आपही की कृपा पर अवलम्बित है। इसलिये हे सर्वशक्तिमान! शिव आपको सर्वदा नमस्कार है।

नीचे लिखे मन्त्र से मृत्तिका को साने-

ॐ **अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।**

उग्र, उग्रतर तथा उग्रतम आदि विश्व के सभी के सभी रूप आपके रुद्ररूप से उत्पन्न हुए हैं। इसलिये सबके आदि कारण आपके रुद्ररूप को मेरा बारम्बार नमस्कार है।

इस मन्त्र से मृत्तिका का पिण्डीकरण करें-

ॐ **तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।**

उसी एकमात्र पुरुष को सब कुछ जानकर देवों के देव महादेव में अपनी बुद्धि अवस्थित कर केवल भगवान् रुद्र को ही मैं प्रेरित करता हूँ।

अधोलिखित मन्त्र से सुन्दर शिवलिंग का निर्माण करें।

ॐ **ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।**
ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ।।

विश्व की सभी विद्याओं के स्वामी तथा चराचर सभी जीवों के एकमात्र अधीश्वर तथा ब्रह्मादि देवताओं के भी प्रभु और उनके एकमात्र आराध्य पूर्ण ब्रह्मरूप आप ही हैं। इसलिये हे शिव! आप मेरा सर्वदा कल्याण करते रहें।

शिवलिंग बनाकर बायें हाथ, वेदी, ताम्रपत्र अथवा बिल्वपत्र पर ही अक्षत पुष्पयुक्त लिंग की स्थापना अधोलिखित मन्त्र से करें-

"ॐ **हौं ह्रीं जूं सः शूलपाणये नमः**"

लिंग स्थापित करने के पश्चात् नीचे लिखा संकल्प मन्त्र[1] बोलें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्यब्रह्मणः द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे श्रीविक्रमादित्यराज्यतः अमुकसंख्याके, अमुकनामसंवत्सरे, अमुकायने, अमुक ऋतौ, महामंगल्यप्रदे मासानां उत्तमे मासे, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक गोत्रो, अमुक शर्मा, वर्मा, गुप्त आदि शुभ पुण्यफल प्राप्ति कामनया पुरुषार्थ – चतुष्ट्य – प्राप्त्यर्थम्, सर्वारिष्टशांत्यर्थम् तथा च सदाशिव – प्रीत्यर्थे पार्थिव – पूजनमहं करिष्ये।

"**ॐ हौं ह्रीं जूं सः पिनाकपाणये नमः**" इस मन्त्र का उच्चारण करके अधोलिखित मन्त्रों से शिव का आह्वान करें।

कैलासशिखराद्रम्यात्समागच्छ मम प्रभो। पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्तफलदो भव।। देवदेवं महादेवं सर्वलोकहिते रतम्। यथोक्तरूपिणं देवं शम्भुमावाहयाम्यहम्।। सदाशिव इह स्थितो भव।

हे प्रभो! अतिरमणीक कैलास पर्वत से यहाँ पधार कर मेरे द्वारा किये हुए जप तथा पूजा को स्वीकार करके अभीष्ट फलों की संसिद्धि के लिये वर देने का अनुग्रह करें। हे देवों के देव महादेव! सम्पूर्ण जीवमात्र के कल्याण में सदैव तल्लीन रहनेवाले भगवान् शंकर के तथाकथित स्वरूप को मैं हृदय से आह्वान करता हूँ इसलिये यहाँ पधार कर यहीं निवास कीजिये।

आह्वान के पश्चात् प्राणप्रतिष्ठापन के लिये हाथ में जल लेकर नीचे लिखा विनियोग बोलें।

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुःसामानिच्छंदांसि प्राणाख्या देवता आँ बीजम् ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकम् पार्थिवलिंगप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः। इतना कहकर जल भूमि पर छोड़ दें।

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र के ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र ऋषि हैं तथा ऋग्, युजः और सामवेद ये तीनों छन्द हैं उसके प्राण नामक देवता हैं आँ बीज है, ह्रीं शक्ति है एवं क्रौं कीलक है ऐसे महामन्त्र को पार्थिवलिंग के प्राणप्रतिष्ठान के लिये विनियोजित करता हूँ।

प्राणप्रतिष्ठा – हाथ में पुष्प लेकर उसे लिंगमूर्ति पर स्पर्श करते हुए नीचे लिखे मन्त्र बोलें–

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामच्छन्दोभ्यो नमः, मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः, हृदि। ॐ आँ बीजाय नमः, गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्त्यै नमः, पादयोः। ॐ क्रौं कीलकाय नमः, सर्वाङ्गेषु।

इस प्रकार न्यास करके पुनः पार्थिवलिंग का स्पर्श करें तथा हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे

1. कहीं–कहीं पर शुरू में ही संकल्प लेकर मृदाहरण आदि क्रिया सम्पन्न की जाती है।

मन्त्र को बोलते हुए पार्थिवलिंग के ऊपर छिड़कते रहें।

ॐ **आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं शिवस्य प्राणा शिवस्य जीव शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। शिव इहागच्छेह तिष्ठ मम पूजां गृहाण।।**

ॐ **आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः सोऽहं** – इन बीज मन्त्रों की शक्ति से शिव का जीव, शिव का प्राण तथा शिव की समस्त ज्ञान एवं कर्मेन्द्रियाँ इस पार्थिवलिंग में प्रविष्ट होकर चिरकालतक सुखपूर्वक अधिवासित रहें। हे शिव! आप यहाँ आकर इसी लिंग में निवास कर मेरी पूजा ग्रहण करें। फिर हाथ में पुष्प लेकर अधोलिखित मन्त्र से प्राण संस्थापन करें।

ॐ **अस्मिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजां करोम्यहम्। तावत्त्वंप्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन् संस्थितिं कुरु।**

हे जगत् के स्वामी सदाशिव! जबतक मैं आपका पूजन करूँ तबतक बड़े प्रेम से आप इस पार्थिवलिंग में निवास करें।

इसके पश्चात् एकाग्रचित्त होकर नीचे लिखे श्लोकों से भगवान् शंकर का ध्यान करें–

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्।
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

'चाँदी के पहाड़ की कान्ति के सदृश सुन्दर देह धारण करने के साथ ही जिसने अपने मस्तक पर अतिरम्य चन्द्रखण्ड को भी धारण कर रखा है एवं जिसका समस्त शरीर रत्नादि की तरह कान्तिवत् प्रज्वलित हो रहा है तथा जिसने फरसा, मृग, वरद व अभय आदि सुन्दर मुद्राओं से अपने चारों हाथों को सुशोभित कर रखा है और सुन्दर सर्प का यज्ञोपवीत धारण कर पद्मासीन होकर चतुर्दिक देववृन्दों द्वारा प्रशंसित हो रहा है। ऐसा विश्व का आदिकारण तथा समस्त भयों से दूर करनेवाला, तीन नेत्र और पाँच मुखवाला सदाशिव समस्त ब्रह्माण्ड द्वारा अहर्निश वंद्य हो रहा है ऐसे माहेश्वरीरूप का शुद्ध हृदय से मैं ध्यान करता हूँ।' ध्यान के अनन्तर विविध उपचारों से पार्थिवेश्वर की पूजा करनी चाहिये।

अधोलिखित मन्त्रों से पार्थिवलिंग का पूजन[1] करें–

ॐ **शिवायः नमः, पाद्यं समर्पयामि।** (पाद्य के लिये जल अर्पित करें)
ॐ **महेश्वराय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।** (अर्घ्यजल अर्पित करें)

---

1. पूजा के अनेक उपचार हो सकते हैं। उन सभी उपचारों को भगवान् शिव के नाममन्त्रों द्वारा अर्पित करना चाहिये। ॐकार के बाद नाम में चतुर्थी विभक्ति लगाकर आगे नमः जोड़ें। तदनन्तर उपचार की सामग्री का नाम लेते हुए अन्त में 'समर्पयामि' बोलें। यहाँ पर केवल थोड़े से उपचारों से पूजा बतायी गयी है। विस्तृतरूप से पूजो- पचार द्वारा पूजा करने के लिये उपर्युक्त विधि का प्रयोग करें।

ॐ **शम्भवे नमः, अर्घ्यान्ते आचमनीयं समर्पयामि।** (आचमन के लिये जल अर्पित करें)

पंचामृतं मयानीतं पयोदधि घृतं मधु। शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।

उपर्युक्त मन्त्र से लिंग को पंचामृत (दूध, दही, घी, मधु, शर्करा) से स्नान करा कर नीचे लिखे मन्त्र से शुद्धोदक स्नान करावें–

ॐ **नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शिवाय च शिवतराय च।**

ॐ **ज्येष्ठाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।** (वस्त्र समर्पित करें)

ॐ **रुद्राय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।** (यज्ञोपवीत अर्पित करें)

ॐ **कपर्द्दिने नमः, पुनराचमनीयम् समर्पयामि।** (आचमन के लिये जल अर्पित करें)

ॐ **कालाय नमः, गन्धं समर्पयामि।** (गन्ध समर्पित करें)

ॐ **कलविकरणाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।** (अक्षत समर्पित करें)

ॐ **बलविकरणाय नमः, बिल्वपत्र – धत्तुरादि पुष्पाणि समर्पयामि।** (बिल्वपत्र, धतूरादि के फूल अर्पित करें)

ॐ **बलाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।** (धूप अर्पित करें)

ॐ **बलप्रमथनाय नमः, दीपं दर्शयामि।** (दीप दिखायें तथा हाँथ धो लें)

ॐ **नीलकण्ठाय नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।** (नैवेद्य अर्पित करें)

ॐ **भवाय नमः, ऋतुकालोद्भूत फलादि समर्पयामि।** (ऋतुफल अर्पित करें)

ॐ **मनोन्मनाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।** (आचमन के लिये जल अर्पण करें)

ॐ **शम्भवे नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।** (ताम्बूल अर्पण करें)

ॐ **त्रिलोकेशाय नमः, अभिषेकं समर्पयामि।**[1] (अभिषेक के लिये जल अर्पण करें)

ॐ **शितिकण्ठाय नमः, नीराजनं समर्पयामि।** (आरती दिखायें)

ॐ **शिवप्रियाय नमः, साधुपुण्यार्थे दक्षिणां समर्पयामि।** (दक्षिणा अर्पित करें)

ॐ **शम्भवे नमः, अन्ते नमस्करोमि।** (नमस्कार करें)

पूजन के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से पुष्पांजलि अर्पण करें।

ॐ **हर विश्वाऽखिलाधार निराधार निराश्रय। पुष्पांजलिमिमां शम्भो गृहाण वरदो भव। ॐ पार्थिवेश्वराय नमः, पुष्पांजलिं समर्पयामि।**

'अखिल विश्व के आधार आप ही हैं किन्तु स्वयं बिना किसी आधार तथा आश्रय के सर्वत्र व्याप्त हैं इसलिये हे हर! पुष्पांजलि ग्रहण करके मुझे वर दीजिये।

प्रार्थना–रूपं देहि जयं देहि भाग्यं देहि महेश्वर।

1. यहाँ पर शिवमहिम्नःस्तोत्र से या वैदिक रुद्रसूक्त से (जिसका उल्लेख वैदिक शिवपूजा में किया जायेगा) जलधारा द्वारा अभिषेक कर उक्त मन्त्र पढ़ सकते हैं।

पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे।।

'हे महेश्वर! आप मेरी रूप, विजय, सौभाग्य, पुत्र-पौत्र तथा धन-धान्य आदि समस्त इच्छाओं की पूर्ति करते रहें। (प्रार्थना किसी अन्य प्रकार से भी की जा सकती है। अपनी रुचि के अनुकूल प्रार्थना करें।)

इस प्रकार भगवान् शिव से प्रार्थना करके नीचे लिखे किसी एक मन्त्र का यथाशक्ति जप करें। कम से कम एक माला (108 बार)।

1. **"ॐ नमः शिवाय"**

2. **"ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः प्रपन्नपारिजाताय स्वाहा"**

जप के अनन्तर निम्न मन्त्र को पढ़कर देवता के दक्षिण हाथ में भावना द्वारा जप को समर्पित करें।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।

'आप गुप्त से भी गुप्त परम गोपनीय हैं, मेरे द्वारा किये जप को स्वीकार करके हे महेश्वर ! कृपा करके मेरे सभी अभीष्टों को सिद्ध कीजिये।' तदनन्तर गंध, अक्षत, फूल के द्वारा नीचे लिखे मन्त्रों से शिवलिंग की अष्टादिक स्थित्यावरण पूजा करें अर्थात् शिव की अष्टमूर्तियों की पूजा करें-

ॐ **शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः पूर्वस्याम्।** (पूर्वदिशा में पृथ्वीरूप में पूजा करें)
ॐ **भवाय जलमूर्तये नमः ईशान्याम्।** (ईशानकोण में जलरूप में पूजा करें)
ॐ **रुद्राय अग्निमूर्तये नमः उत्तरस्याम्।** (उत्तरदिशा में अग्निरूप में पूजा करें)
ॐ **उग्राय वायुमूर्तये नमः वायव्याम्।** (वायव्यकोण में वायुरूप में पूजा करें)
ॐ **भीमाय आकाशमूर्तये नमः पश्चिमायाम्।** (पश्चिमदिशा में आकाशरूप में पूजा करें)
ॐ **पशुपतये यजमानमूर्तये नमः नैर्ऋत्याम्।** (नैर्ऋत्यकोण में यजमानरूप में पूजा करें)
ॐ **महादेवाय सोममूर्तये नमः दक्षिणस्याम्।** (दक्षिणदिशा में चन्दमारूप में पूजा करें)
ॐ **ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः आग्नेय्याम्।** (अग्निकोण में सूर्यरूप में पूजा करें)

(अष्टमूर्तियों की पूजा के मन्त्र वीरमित्रोदयः पूजाप्रकाशः, पृ. 201-202 में भी पाये जाते हैं।)

अष्टमूर्तियों की पूजा कर स्तोत्र का पाठ करें। उदाहरण के लिये-

स्तोत्र

ॐ **नमः ॐकाररूपाय वेदरूपाय ते नमः।**
अलिंगलिंगरूपाय विश्वरूपाय ते नमः।।
नमो मोक्षपदे नित्यं तुभ्यं नादात्मने तथा।
नमः शब्दस्वरूपाय रूपातीताय ते नमः।।

त्वं त्राता सर्वलोकानां त्वमेव जगतां पिता।
त्वं भ्राता त्वं सुहृन्मित्रं त्वं प्रियः प्रियरूपधृक्।।
त्वं गुरुस्त्वं गतिः साक्षात् त्वं देवं त्वं पितामहः।
नमस्ते भगवान् रुद्र भास्करामिततेजसे।।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर शिवाऽव्यय।
अनेन पूजनेन त्वं वांछितार्थप्रदो भव।।
दण्डवत् प्रणतो भूत्वा स्तुत्वा चैव विशेषतः।
एकाग्रः प्रणतो भूत्वा मन्त्रमेतदुदीरयेत्।।
अंगहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर ।
पूजितोऽसि महादेव तत्क्षमस्वाम्बिकापते ।।
अन्यथासक्तचित्तेन क्रियाहीनेन वा प्रभो।
मनोवाक्काय – दुष्टेन पूजितोऽसि त्रिलोचन।।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव दासे कृत्वा दयामपि।
शरणागतदीनार्त – परित्राण – परायण।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनो बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्यां अश्विनोर्भेषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसामभिषिंचामि ।।

उपर्युक्त मन्त्र से शिवलिंग को अभिषिक्त करें। तदुपरान्त तिलक धारण करके नीचे लिखे मन्त्र को बोलते हुए शिव की परिक्रमा करें–

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

अब अधोलिखित मन्त्रों से क्षमायाचना करें–

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर।।
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

हे देवाधिदेव! मैं आह्वान, पूजन एवं विसर्जन आदि कुछ भी नहीं जानता इसलिये हे हर! कृपा करके मेरा यह अपराध क्षमा करें। बिना मन्त्र, बिना क्रिया एवं बिना भक्तिभाव के जो कुछ पूजा मैंने आपकी की है उसे दया करके हे मेरे देव! पूर्णता प्रदान करके मेरे द्वारा किये गये पापों को तथा मेरे दारिद्र्य को क्षमा करते हुए मुझे सुख सम्पत्ति प्रदान करें।

अब नीचे लिखे मन्त्र से हाथ में फूल, अक्षत आदि लेकर शिवलिंग पर छोड़कर विसर्जन[1] करें–

उग्रो महेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाकधृक्।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेव विसर्जनम्।।
ईशानः सर्वविद्यानामोंकारो भुवनेश्वर।
कैलासं गच्छ देवेश पुनरागमनाय च।।

समर्पण–'ॐ अनेन पार्थिवेश्वर–पूजनेन श्रीसदाशिवो देवता प्रसन्नोऽस्तु।' (इस प्रकार कहकर पूजनकर्म समर्पण करें।)

(उपर्युक्त लेख शिवपूजा–संबंधी प्रचलित पुस्तकों से लिया गया है।)

❁❁❁❁❁❁

पङ्केनैव यथा पङ्कं रुधिरं रुधिरेण वै।।
हिंसया कर्मणा कर्म कथं क्षालयितुं क्षमः।
हिंसाकर्ममयोयज्ञः कथं कर्मक्षये क्षमः।।

(पद्ममहापु. उत्तरखण्ड 132/140-141)

जैसे कीचड़ से कीचड़ तथा रक्त से रक्त को नहीं धोया जा सकता, उसी प्रकार हिंसाप्रधान यज्ञ–कर्म से कर्मजनित मल कैसे धोया जा सकता है। हिंसायुक्त कर्ममय (सकाम) यज्ञ कर्म–बन्धन का नाश करने में कैसे समर्थ हो सकता है।

1. पार्थिवलिंग एवं उसपर अर्पित सामग्री को तीर्थजल अथवा किसी पवित्र स्थान में विसर्जित करना चाहिये।